ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
YIS

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October-December, 2020
Page Nos. 213-217

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

ग्रामीण क्षेत्रों में मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

(अल्मोड़ा जनपद के द्वाराहाट विकास खण्ड के विशेष सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

राधा*
डॉ0 रेनू प्रकाश**

शोध सारांश

गाँव में निवास करने वाली ग्रामीण जनता के जीवन स्तर में जो परिवर्तन आया है वह मीडिया की ही देन है, इसी वजह से मीडिया ग्रामीण क्षेत्रों में विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन बन गया है। हम देखतें है कि आज ग्रामीण समाज परिवर्तन की ओर अग्रसर है मीड़िया के द्वारा ग्रामीण जीवन में परिवर्तन के अध्ययन का अर्थ यह समझना है कि मीडिया से ग्रामीण व्यक्तियों और समाज के सामाजिक जीवन पर किस तरह का प्रभाव पडता है। वर्तमान में मीडिया ने समाज के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। मीडिया के प्रभाव पर गौर करने पर स्पश्ट होता है कि मीडिया की ग्रामीण समाज में शक्ति, महत्ता एवं उपयोगिता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभावों मे काफी वृद्धि हुई है। लेकिन साथ–साथ अपराधिकता, नकारात्मक विचार, सामाजिक विचलन एवं दुराचार जैसे नकारात्मक प्रभाव भी उभरकर सामने आए है। मीडिया के इस नकारात्मक व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और असंतुलन की स्थिति पैदा होती है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से द्वाराहाट विकास खण्ड जैसे परम्परागत समाज में मीडिया के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव को स्पश्ट करने का प्रयास किया गया है।

Keywords : ग्रामीण समाज, मीडिया, जनसंचार, मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव।

प्रस्तावना

ग्रामीण समाज जो युगों–युगों से विकास की मुख्यधारा से पिछड़ा रहा हैं, परन्तु आज मीड़िया ग्रामीण क्षेत्रों तक जिस जगह चाहे, जैसे चाहे और जिस तरीके से चाहे सूचना पहुचानें का कार्य कर रहा है। आज मीडिया सभी समाजों की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है इसके अभाव में न मानव समाज का विकास सम्भव हो सकता है और न ही सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था का आधुनिक निर्माण। क्योंकि आज मीड़िया के अभाव में व्यक्ति का समाज सीमित और संकुचित हो जाता है।

मीडिया वह शारीरिक अथवा यान्त्रिक साधन है जो कि सन्देश को चैनल के अनुरुप संकेतो में बदलकर सम्प्रेशित करने में सक्षम है। मीडिया की प्रकृति श्रव्य–दृश्य एवं दृश्य–श्रव्य है। इसके मूल मे मनुश्य मे संवेदी अंग है। मनुश्य के शरीर मे सूचना ग्रहण करने वाले अंगो मे कान, आँख, नाक, जिह्वा एवं त्वचा है।[1]

मीडिया को समाज का दर्पण कहते है। मीडिया में प्रकाशित समाचार जनभावना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मीडिया द्वारा प्रकाशित समाचारों का संज्ञान शासन प्रशासन भी लेता है। अगर कोई समाचार किसी समस्या से सम्बन्द्ध होता है तो उसके शीघ्र निवारण की संभावना भी रहती है इसी तरह कोई समाचार किसी वर्ग विशेश से सम्बन्धित रहता है तो समाचार का प्रभाव भी उस समाज पर प्रतिविम्बित होता है।[2] यह बात सही है कि इन संचार माध्यमों की क्रान्ति ने पूरे विश्व में मानवीय संवेदना के नये सरोकार स्थापित किये है तथा पूरे विश्व को एक बंधुत्व में बांधने का सार्थक प्रयास किया है। परन्तु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि पिछले दो दशकों से जिस तरह के दृश्य व श्रव्य माध्यमों का आकाशीय हमला हमारे समाज पर हो रहा है, उनसे हमारी सामाजिक–सांस्कृतिक नीवं तथा हमारे परम्परागत मूल्यों को हिलाकर रख दिया है। हमारे समाज के गठबंधन, सामाजिक रिश्तों तथा परिवार को विखण्डन का सामना करना पड़ रहा है।[3] साम्प्रदायिक दंगे, हत्या, चोरी, लूट, डकैती, बलात्कार, साइबर क्राइम पर लगभग सभी समाचार पत्रों, टेलीविजन, इन्टरनेट आदि पर जिस खूबी के साथ महिमा मंडन करते हुए चित्रण प्रस्तुत किया जाता है उसका सीधा और गहरा असर व्यक्ति की मनांदशा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है जो उसे विचलित व्यवहारी बनाने में सहायक है।[4]

इस प्रकार स्पश्ट है कि ग्रामीण समाज में मीडिया के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रभाव देखे जा सकते ह अतः प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से ग्रामीण समाज में मीडिया के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रभावों को शोध बिन्दु के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है

*शोध छात्रा – समाजशास्त्र विभाग, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोड़ा।
**एसोसिएट प्रोफेसर – समाजशास्त्र विभाग, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोंडा।

साहित्य सर्वेक्षण

योगेश अटल (1971) ने उत्तर प्रदेश के सात कस्बों का अध्ययन किया और निश्कर्श निकाला कि राजनैतिक जागरुकता लाने में समाचार पत्रो, रेड़ियों और फिल्मों का महत्वपूर्ण योगदान है और जो सम्प्रेशण माध्यम से जुडे नही रहते वे जानकारी से अनभिज्ञ रहते है।[5]

एम0 वी0 सागर (1980) ने ग्रामीण महाराश्ट्र मे टेलीविजन कार्यक्रमों को ग्रामीणों की जरुरत के आधार को जानने हेतु अध्ययन किया है। अपने परिणामों में उन्होने पाया कि ग्रामीणों में टेलीविजन कार्यक्रमों की उपयोगिता के बारे में अधिक जानकारी नही है। अधिकाँश ग्रामीणों के लिए टेलीविजन का अर्थ फिल्म ही है उन्होंने ग्रामीण महाराश्ट्र में ऐसे नेतृत्व की कमी महसूस की जो टेलीविजन के उचित उपयोग के बारे मे लोगों को प्रेरित कर सके।[6]

योगेन्द्र सिहं (2000) ने अपनी पुस्तक "**भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन**" मे संचार का वैश्वीकरण मीडिया और स्थानीय संस्कृति के बारे में लिखा है कि, जनसंचार माध्यमों से आयी क्रान्ति के कारण बैकिंग व्यापार प्रबन्ध के क्षेत्रों में विकास हुआ है। जनसंचार साधनों ने राश्ट्रीय एवं सांस्कृतिक दूरियो को कम करने का प्रयास किया है। संचार के वैश्वीकरण से समय क्षेत्र एवं संस्कृति में आए बदलाव की वजह से स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राश्ट्रीय संस्कृति में परिवर्तन आया है, जो सकारांत्मक भी है और नकारात्मक भी। यह कहा जा सकता है संस्कृति में परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।[7]

एस. आर. जोशी (2016) के अनुसार मीडिया की भूमिका समाज में सकारात्मक एवं नकरात्मक दोनों ही रूपों में दिखाई देता है। मीडिया पर प्रसारित कार्यक्रमों के द्वारा समाज में अनेक परिवर्तन हो रहे है।[8]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समाज पर मीडिया के द्वारा पडने वाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को शोध बिन्दु के रूप में विश्लेशण करना है।

अध्ययन की प्रांसगिकता

वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्व एंव भूमिका, निरन्तर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज मीडिया की उपेक्षा कर आगे नही बढ़ सकता। मीड़िया ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी गतिविधियों को प्रभावित कर समाज में एक विचारणीय परिवर्तन को जन्म दिया है, और यह परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन द्वाराहाट विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित है। अतः यहा पर यह अध्ययन करना इसलिए भी विशेश महत्व का हो जाता है क्योंकि यह समाज परम्परागत समाज होते है। जहाँ आज भी ग्रामीणवासी परम्परागत विचारधाराओं को अपनायें हुए है। अतः यहाँ पर मीडिया द्वारा पडनें वाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को देखना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ही मीडिया द्वारा पडनें वाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को देखना है अतः प्रस्तुत शोधपत्र में प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका एवं जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों एवं परिणामों को स्पश्ट किया गया है।

शोध अभिकल्प एवं पद्धतिशास्त्र

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेशणात्मक है अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अनवेशात्मक एंव विवेचनात्मक अभिकल्प का उपयोग किया गया है। जैसा कि हम जानते है परिवर्तन प्रकृति का नियम है और कोई भी समाज इससे अछूता नही है। आधुनिकीकरण के इस वर्तमान परिपेक्ष्य के सन्दर्भ में यदि बात की जाय तो सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका के महत्व को हम नकार नही सकते। द्वाराहाट विकासखण्ड जैसे परम्परागत समाज में मीडिया की भूमिका को देखना वर्तमान समाज की आवश्यकता भी है। अतः अध्ययन क्षेत्र की परम्परागता को ध्यान में रखकर मुख्य रूप से अन्वेशणात्मक दृश्टिकोण के विभिन्न परिपेक्ष्यों जैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आधुनिकीकरण के सन्दर्भ मे ग्रामीण समाज में मीडिया के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन निर्दश पर आधारित है, अल्मोडा जनपद का द्वाराहाट विकासखण्ड कुल 11 न्याय पंचायतों में विभक्त है जिनमें अध्ययन हेतु दो न्याय पंचायते विजयपुर एवं रियूनी को चयनित किया गया है। प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर ये दोनो ही न्याय पंचायते द्वाराहाट विकासखण्ड की सबसे बड़ी न्याय पंचायत है अतः अध्ययन के दृश्टिकोण से ये न्याय पंचायते हमारे अध्ययन का समग्र बनी। विजयपुर न्याय पंचायत मे 14 ग्राम पंचायते है, जिसके अन्तर्गत 22 राजस्व ग्राम है, जिसमें कुल 1487 परिवार है।

इसी प्रकार रियूनी में 13 न्याय पंचायतें है जिसके अर्न्तगत 25 राजस्व ग्राम है, इसमें कुल 1993 परिवार निवासरत है। परिवारों की संख्या अधिक होने के कारण इन्हें समग्र रूप में सम्मिलित नही किया जा सकता था। अतः अध्ययन हेतु दैव निर्दशन पद्धति का उपयोग तथा निदर्श चयन का निर्णय लिया गया। निदर्श पूर्णतया प्रतिनिधित्वपूर्ण रहे इसलिए निर्णय लिया गया कि दोनों न्याय पंचायतों मे निवास करने वाले परिवारों में से 10 प्रतिशत का चयन किया जाये, अतः 10 प्रतिशत का चयन लाटरी पद्धति द्वारा किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन विजयपुर एवं रियूनी न्याय पंचायतों में निवासरत परिवारों का 10 प्रतिशत (विजयपुर 149 तथा रियूनी 199 परिवार) कुल 348 अध्ययन ईकाईयों पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य .रुप से प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है तथा आकड़े एकत्र करने के लिए मुख्य रुप साक्षात्कार अनुसूचि तथा आवश्यकतानुसार असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

उपलब्धियाँ :

अध्ययन से प्राप्त आंकडों का विश्लेशण निम्नांकित सारणियों द्वारा स्पश्ट किया गया है।

सारणी संख्या 01

टेलीविजन और समाचार पत्र ग्रामीण विकास में सहायक, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 स0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	216	62.07
2	नही	7	2.01
3	थोड़ा बहुत	125	35.92
	योग	348	100

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (62.07 प्रतिशत) का मानना है कि टेलीविजन और समाचार पत्र ग्रामीण विकास में सहायक है। 2.01 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नही मानते, जबकि 35.92 प्रतिशत उत्तरदाता थोड़ा बहुत सहायक मानते है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते है कि टेलीविजन और समाचार पत्र ग्रामीण विकास में सहायक है।

सारणी संख्या 02

विभिन्न संचार माध्यम सकारात्मक भावों के साथ–साथ नकारात्मक भावों का चित्रण भी प्रस्तुत कर रहे है, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	**हाँ**	**231**	**66.38**
2	**नही**	**19**	**5.46**
3	**कभी–कभी**	**98**	**28.16**
	योग़	**348**	**100**

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (66.38 प्रतिशत) मानना है कि विभिन्न संचार माध्यम सकारात्मक भावों के साथ–साथ नकारात्मक भावों का चित्रण भी प्रस्तुत कर रहे है। जबकि 5.46 प्रतिशत ऐसा नही मानते तथा 28.16 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि विभिन्न संचार माध्यम कभी–कभी सकारात्मक भावों के साथ–साथ नकारात्मक भावों का चित्रण भी प्रस्तुत करते है। अतः स्पश्ट है कि प्राप्त आंकडे इस बात की ओर इंगित करते है विभिन्न संचार माध्यम सकारात्मक भावों के साथ–साथ नकारात्मक भावों का चित्रण भी प्रस्तुत कर रहे है।

सारणी संख्या 03

मीडिया के द्वारा नकारात्मक भाव समाज में अपराध, असमायिकता, अनैतिकता, दुराचार, अश्लीलता जैसे विचलन व्यवहार को जन्म देने के सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं के मत

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सहमत	273	78.45
2	असहमत	64	18.39
3	अनिश्चित	11	3.16
	योग	348	100

सारणी के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाता (78.45 प्रतिशत) इस बात से सहमत है कि मीडिया के द्वारा नकारात्मक भाव समाज में अपराध, असमायिकता, अनैतिकता, दुराचार, अश्लीलता जैसे विचलन व्यवहार को जन्म दे रहा है। जबकि 18.39 प्रतिशत इस मत से असहमत तथा 3.16 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित है। अतः स्पश्ट है कि प्राप्त आंकडे इस बात की ओर इंगित करते है कि मीडिया के द्वारा नकारात्मक भाव समाज में अपराध, असमायिकता, अनैतिकता, दुराचार, अश्लीलता जैसे विचलन व्यवहार को जन्म दे रहा है,

सारणी संख्या 04

आधुनिक संचार ज्ञानवर्धक के साथ–साथ नकारात्मक विचारों को जन्म देता है, के सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं के मत

क सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सहमत	304	87.36
2	असहमत	37	10.63
3	अनिश्चित	7	2.01
	योग	348	100

ऐसा माना जाता है कि आधुनिक संचार माध्यमों ने मनुश्य का ज्ञानवर्धन तो किया है परन्तु इसके विपरीत यह नकारात्मक विचारों को भी जन्म दे रहा है, क्योंकि सर्वाधिक (87.36 प्रतिशत) उत्तरदाता इस मत से सहमत है जबकि (10.63 प्रतिशत) उत्तरदाता इस मत से असहमत तथा 2.01 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित है। अतः स्पश्ट है कि प्राप्त आंकड़े इस बात की ओर इंगित करते है कि आधुनिक संचार माध्यम जहाँ एक ओर ज्ञानवर्धक होते है वही दूसरी ओर नकारात्मक विचारों को भी जन्म देती है।

सारणी संख्या 05

मीडिया युवाओं और किशोरियों को विचलित कर अपराधिता की ओर अग्रसर करता है, के सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं के मत

क सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सहमत	236	67.82
2	असहमत	95	27.30
3	अनिश्चित	17	4.89
	योग	348	100

मीडिया के नकारात्मक स्वरूप को स्पश्ट करते हुए सारणी के आंकडे बताते है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (67.82 प्रतिशत) इस बात से सहमत है कि मीडिया युवाओं और किशोरियों को विचलित कर अपराधिता की ओर अग्रसर करता है। जबकि 27.30 प्रतिशत इस बात से असहमत, व 4.89 प्रतिशत अनिश्चित है। निश्कर्श रुप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया युवाओं और किशोरियों को विचलित कर अपराधिता की ओर अग्रसर करता है।

सारणी संख्या 06

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीड़िया समाज को शिक्षित तथा जागरुक बनानें मे सकारात्मक भूमिका का निर्वहन, के सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	**सहमत**	**315**	**90.52**
2	**असहमत**	**24**	**6.90**
3	**अनि्चित**	**9**	**2.59**
	योग	**348**	**100**

मीडिया के सकारात्मक स्वरूप को स्पश्ट करते हुए सारणी के आंकड़े बताते है कि सर्वाधिक (90.52 प्रतिशत) उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीड़िया समाज को शिक्षित तथा जागरुक बनानें मे सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करता है। इसके विपरीत 6.90 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, व 2.59 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित है। सार रुप में कहा जा सकता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीड़िया समाज को शिक्षित तथा जागरुक बनानें मे सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करता है

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों मे मीडिया के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रभावों को देखा जा सकता है। अध्ययन से प्राप्त आंकडो के अनुसार कहा जा सकता है कि टेलीविजन और समाचार पत्र ग्रामीण विकास मे सहायक है क्योंकि सर्वाधिक उत्तरदाताओं द्वारा इस तथ्य को स्वीकार किया गया है संचार माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिन्ट मीड़िया) सकारात्मक भाव जैसे समाज को शिक्षित, जागरुक करनें तथा ज्ञानवर्धन के साथ–साथ नकारात्मक भावों का चित्रण प्रस्तुत कर रहे है। नकारात्मक भाव समाज में अपराध, असमायिकता, अनैतिकता, दुराचार, अश्लीलता जैसे विचलन व्यवहार को जन्म दे रहा है। तथा युवाओं और किशोरियों को विचलित कर अपराधिता की ओर अग्रसर करता है। अधिकांश उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि मीड़िया जातिवाद के विघटन का एक प्रमुख कारण भी है। अतः स्पश्ट है कि मीडिया के विभिन्न संसाधनो ने जहाँ एक ओर ग्रामीण समाज को परिवर्तित कर विकास की ओर उन्मुख किया है वहीं दूसरी ओर इनके प्रभाव से कई प्रकार के नकारात्मक प्रभाव भी दृश्टिगत होते है।

सन्दर्भ :–

1. सिह, ओम प्रकाश, ''संचार के मूल सिद्धान्त'' प्रकाशक बी0 के0 तनेजा, क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी नई दिल्ली–110015, प्रथम संस्करण 2002 पृश्ठः–160
2. Kosho J. "media influnces on public opinion, atlitific toward the migration crisis;" international journal of scientific and technology research; 2016 pp 86-91.
3. चोपड़ा, लक्ष्मेन्द्र, ''जनसंचार का समाजशास्त्र,'' आधार प्रकाशन, पंचकूला 2002
4. गुप्ता, दीपक., मेहत्ता, विवके, ''टेलीविजन में मीडिया द्वारा नकारात्मक विचारों के प्रसारण–प्रस्तुतीकरण की एक परिणति : समाज में व्याप्त आपराधिकता,'' राधा कमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 19, अंक 1, जनवरी–जून 2017, पृश्ठः–98
5. Atal Yogesh, "Local communities and National politics: A study communication in links and political Involvoment Delhi," National publishing House 1971.
6. Sagar,M,V, "Television Needs Audience," vidura, vol.17, No.4, August 1980,P.256-267.
7. Singh, Yogendra, "Culture change in india," Rawat publication, Jaipur,2000;P.P. 55-60.
8. जोशी, एस.0 आर0., ''सोशियल एण्ड कल्चरल इम्पेक्ट ऑफ केबल एण्ड सेटेलाइट'' टी.वी. डेवलपमेन्ट एण्ड एज्यूकेशन यूनिट इसरो, अहमदाबाद, 1993, पृश्ठ. 42